(_बिस्मील्ला हिर्रहमा निर्रहीम_)

-- मुक़दमा (किताब का तआर्रुफ़) --

अल्हम्दुलिल्लाह, इससे पहले हमने किताबो के मजमुए-"अल-जामी अल मज़ारातुल हिजाज़ मअऐ सऊदी-अरब के दरगाह/ मज़ारात" में दीने-इस्लाम की मुक़द्दस किताबों की असल अरबी, उर्दू तरजुमा और हिन्दी तरजुमे में जमा कर कर ये बात ज़ाहिर कर दी के, अंबिया और सलफ़ (सहाबा, ताबईन और तबाताबईन) ने मुबारक शख्सियात की मुबारक क़बरों को ज़मीन से ऊँचा व कोहान नुमा बना कर उन क़बरों को कंकर, पत्थर और संगे मर-मर से कवर किया और उन मुबारक क़बरों पर खैमे, गुंबद और मज़ारात तामीर किए.

जिस तरह सालिहीन की मुबारक क़बरों के निशान बरक़रार रखने के लिए करने वाले हर जाईज़ अमल को कुछ जमाअतें बिदअत और शिर्क के इलज़ाम लगा कर अब तक उम्मत को गुमराह कर रही थी. बिलकुल उसी तरह उम्मत के इत्तेहाद को तोड़ने वाली उन जमाअतों ने अक्सर तवस्सुल (वसीले) से जुड़े हुए हर अक़ीदे को बिदअत और शिर्क कह कर उम्मत ऐ मुस्लिमा को ईस मसले में इल्मे हक़ को देखने ही से रोक रखा हैं. लफ्ज़े तवस्सुल (वसीले) से इन्हें इतना शदीद बुग्ज़ है के ईन जमाअतों ने क़ुरान ऐ पाक़ और अहादीसे सहीहा में तवस्सुल (वसीले) से जुडी तमाम रिवायतों को अलग-अलग़ तशरीहात में बाट रखा हैं. कुछ तो लफ्ज़े तवस्सुल (वसीले) को ही शिर्क कहते हैं और कुछ ये ज़ाहिर करते हैं के हम तो सिर्फ़ सालिहीन की हयाती ज़िंदगी में उनसे तवस्सुल के ज़रिए मदद हासिल करने को सहीह कहते हैं लेकिन सालिहीन की मुबारक क़बरों पर जाकर उन्हें तवस्सुल (वसीले) से पुकारने को वो शिर्क करार देते हैं. और कहेते हैं हमें तो सिर्फ़ अल्लाह ही काफी हैं.

हाँ ! बेशक़ अल्लाह तआला हमारे लिए काफी हैं. ईस जहान का खालिक और मालिक अल्लाह तआला ही हैं. ज़िंदगी-मौत, नफा-नुकसान, मर्ज़-शिफ़ा, खुशी-गम अल्लाह सुबहाना व तआला ही के इख़्तियार में हैं. अल्लाह ही रिज़्क अता फरमाता हैं, अल्लाह ही मुसीबतों से बचाता और आज़माइश में राहत अता फरमाता है. अल्लाह करीम तो एय्सा करीम है के उसने अपने मेहबूब बन्दों को भी करीम बना दिया हैं. अल्लाह रहीम तो एय्सा रहीम है के उसने अपने मेहबूब बन्दों को भी रहीम बना दिया हैं. और इसकी दलील में ईस मुक़दमे में जमा की हुई क़ुरान ऐ पाक़ की आयतें और ईस किताब में जमा की हुई तमाम रिवायते गवाही देती हैं के अल्लाह ने खुद को भी मददगार ज़िक्र फ़रमाया है और अंबिया व सालिहीन को भी मददगार ज़िक्र फ़रमाया है और उन मेहबूब बन्दों ने भी खुद को कैसे मददगार ज़ाहिर किया हैं ये पहले क़ुरान ऐ पाक़ की ईन आयातों से देख लेते हैं :

सुरह-5-अल-माईदाह,35: एय इमानवालो! अल्लाह से डरो और उसकी तरफ वसीला तलाश करो.

सुरह-5- अल-माईदाह,55: तुमहारे वली (दोस्त व मददगार) तो सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल ﷺ और इमानवाले (अवलिया व सालिहीन) हैं, जो नमाज़ क़ायम करते हैं, और ज़कात देते हैं, और अल्लाह के हुज़ुर झुके हुए हैं.

सुरह-3-आले-इमरान,49: (हज़रत ईसा عليه السلام ने फ़रमाया) में तुमहारे रब की तरफ से तुमहारे पास एक निशानी लाया हूँ, वह ये के में तुमहारे लिए मिट्टी से परिन्दे जैसी एक शक्ल बनाता हूँ फिर उसमे फूंक मरूँगा तो वो अल्लाह के हुक्म से फ़ौरन जिन्दा परिन्दा बन जाएगा. और पैदाईशी अन्धो को और कोढ के मरीजों को शिफ़ा देता हूँ और में अल्लाह के हुक्म से मुरदों को ज़िन्दा करता हूँ और तुम्हें गैब की खबर देता हूँ

सुरह-12-युसुफ,97&98: (हज़रत याकूब عليه السلام के बेटों ने) कहा: एय हमारे वालिद! हमारे गुनाहों की (अपने रब से) माफ़ी मांगिये, बेशक़ हम खताकार है. (हज़रत याकूब عليه السلام ने) फ़रमाया: अनकरीब में तुमहारे लिए अपने रब से मगफिरत तलब करूँगा, बेशक़ वहीं बख्शने वाला, मेहेरबान हैं.

सुरह-2-बक़रह,89: और जब उन (यहूदियों) के पास अल्लाह की किताब (क़ुराने मजीद) आई जो उनके पास मौजूद किताबों की तस्दीक करने वाली हैं और उससे पहले ये (यहूदी) इसी नबी (नबी अल-उम्मी यानि मुहम्मद ﷺ) के वसीले से काफिरों के खिलाफ फ़तेह मांगते थे, तो जब उनके पास वह नबी तशरीफ़ ले आए तो उनके मुनकिर हो गए, तो अल्लाह की लानत हो इनकार करने वालों पर.

सुरह-4-अल-निसा,64: और हमने हर रसूल को सिर्फ़ ईस लिए भेजा है के अल्लाह के हुक्म से उस (रसूल) की अताअत की जाए और (एय मेहबूब ﷺ) अगर ये लोग जब (गुनाह करके) अपनी जानो पर ज़ुल्म कर बेठे थे तो ये आप के पास आ जाते फिर अल्लाह से माफ़ी मांगते और रसूल ﷺ भी उन के लिए मगफिरत तलब करते, तो वह (उस वसीले और शफाअत के बिना पर) ज़रूर अल्लाह को तौबा क़बूल फरमाने वाला बोहोत ज्यादा मेहेरबान पाते.

सुरह-3-आले-इमरान,164: बेशक़ अल्लाह ने इमानवालों पर बड़ा एहसान फ़रमाया जब उनमे एक रसूल मबऊस फ़रमाया जो उन्हीं में से हैं. वह उन पर अल्लाह की आयतें तिलावत फरमाता हैं. और उन्हें गुनाहों से पाक़ करता हैं. और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम देता हैं.

सुरह-9-तौबा,99&103: और कुछ गाँववाले वह हैं, जो अल्लाह और क़यामत पर इमान रखते हैं, और जो (अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं, उस (खर्च करने) को अल्लाह से करीब होने का और रसूल ﷺ की दुआओं का जरिया समझते हैं. सुन लो ! बेशक़ वो उनके लिए (अल्लाह के) करीब होने का ज़रिया हैं. अनकरीब अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाखिल फरमाएगा, बेशक़ अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है, एय मेहबूब ﷺ ! तुम उनके माल से ज़कात वसूल करो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो और उनके हक़ में दुआ ऐ खैर करो, बेशक़ तुम्हारी दुआ उनके दिलों का चैन हैं और अल्लाह सुनने वाला, जान्ने वाला हैं.

सुरह-33- अहज़ाब,37: अल्लाह ने उसे नेअमत बख्शी, और (एय मेहबूब ﷺ) आप ने उसे नेमत दी.

सुरह-9-तौबा,74: और उन्हें यही बुरा लगा के अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने उन्हें अपने फ़ज़ल से गनी (दौलतमंद) कर दिया.

सुरह-66- अल-तहरीम,4: अगर तुम दोनों अल्लाह की बारगाह में तौबा करो क्यों की तुम दोनों के दिल (एक ही बात की तरफ) झुक गए हैं, और अगर तुम दोनों (नबी ऐ मुकर्रम ﷺ को रंज देने पर) एक दुसरे के मददगार रहे, तो बेशक़ अल्लाह ही नबी ऐ मुकर्रम ﷺ का दोस्त व मददगार हैं, और जिबरईल عليه السلام (दोस्त व मददगार हैं), और सालेह मोमिनीन भी (दोस्त व मददगार हैं) और उसके बाद सब फ़रिश्ते भी उनके मददगार हैं.

सुरह-17-बनी-इसराइल,57: (वह मक़बूल बन्दे) जिनकी ये (काफ़िर) इबादत करते है, वह (मक़बूल बन्दे) खुद ही अपने रब की तरफ क़रीब से क़रीब (पोहोंचने का) वसीला तलाश करते है, उस (अल्लाह) की रहमत की उम्मीद करते है, और उस के अज़ाब से डरते है.

सुरह-9-तौबा,59: और क्या अच्छा होता अगर वह उस पर राज़ी हो जाते, जो अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने उन्हें अता फ़रमाया और कहते के हमें अल्लाह काफी हैं. अनकरीब अल्लाह और उसके रसूल ﷺ हमें अपने फज़ल से और ज्यादा अता फरमाएंगे. बेशक़ हम अल्लाह ही की तरफ रगबत रखने वाले हैं.

अल्लाह ने अपनी रोशन किताब क़ुरान ऐ पाक़ में ईन आयातों को बयान फरमा दिया. ईसके बाद भी उम्मत के इत्तेहाद को तोड़ने वाली जमाअतों ने ईस आयातों की वो तशरीह भी कुछ ईस तरह ज़ाहिर की है जो लफ्ज़े तवस्सुल (वसीले) को शिर्क की तरफ ले जा रही है.

ईस लिए, मुरत्तिब (शेख मुहम्मद शकील) ने **अबु-नजीब सैयद मुहीउद्दीन साहब** (जामा मस्जिद हज़रत ख्वाजा दाना رحمة الله عليه, सुरत) और **अम्मार-उल-इस्लाम दीवान-मदारी** (दरगाह हज़रत ख्वाजा बाबु शाह लतीफ़ رحمة الله عليه, रतलाम) की मदद से ईस किताब को जमा किया है, जिसमे हमने अहादीस की रौशनी में वो रिवायतें जमा की है, जिसमे सलफ़ (सहाबा, ताबईन और तबाताबईन) ने अपनी ज़ाहिरी हयाती ज़िंदगी में खुद नबी ऐ करीम ﷺ के मज़ारे अक़दस पर हाजरी दे कर रसूल-अल्लाह ﷺ को मदद के लिए पुकारा और मदीना से दूर रहकर भी आप ﷺ को मदद के लिए पुकारा. और फिर ताबईने-सहाबा ने सहाबा के दरगाह/ मज़ारात पर हाज़िर हो कर सहाबा को मदद के लिए पुकारा. और फिर तबाताबईने-सहाबा ने ताबईने-सहाबा के दरगाह/ मज़ारात पर हाज़िर हो कर उन ताबईन को मदद के लिए पुकारा. हम अल्लाह-तआला से यही दुआ करते है के वो उम्मते-मुस्लिमा की नस्लों को इत्तेहाद पर रखे. और अंबिया व सलफ़ के अमल के खिलाफ उठने वाले हर फ़ितनो से अल्लाह हमें महफ़ूज़ फरमाए, आमीन.

(मुरत्तिब) शेख मुहम्मद शकील बिन अहमद बिन अब्दुल्लाह ☎ +91-76986-79976 ® सुरत, गुजरात, इंडिया.
ब-तारीख, 17 मार्च 2020, मंगलवार, 22 रजब 1441. https://maktabatzeenatfatima.wordpress.com/

फ़सल-1.) रसूल-अल्लाह ﷺ का हयाती-बसरी ज़िंदगी में वसीले का हुक्म और तरीका फ़रमाना

बाब-1.): नबी ﷺ का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-1) 241 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अहमद बिन हंबल رحمه الله रावी **उस्मान बिन उमर** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल**, किताब-मुसनद अस-सामिइन, बाब-हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه की रिवायात, हदीस नं-17240 में, और

रिवायत-2) 241 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अहमद बिन हंबल رحمه الله रावी **इब्ने इबदाह** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल**, किताब-मुसनद अस-सामिइन, बाब-हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه की रिवायात, हदीस नं-17241 में और

रिवायत-3) 241 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अहमद बिन हंबल رحمه الله रावी **इब्ने इस्माइल अल-बसरी** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल**, किताब-मुसनद अस-सामिइन, बाब-हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه की रिवायात, हदीस नं-17243 में और

रिवायत-4) 273 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम इब्ने माजाह رحمه الله रावी **अहमद बिन मन्सूर बिन सय्यार** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **सुनन इब्ने माजाह**, किताब अल-सलात, बाब- मा जाअ फी सालातील हाजात, हदीस नं-1364 में और

रिवायत-5) 311 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम इब्ने खुज़यमाह رحمه الله रावी **मुहम्मद बिन बश्शार** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **सहीह इब्ने खुज़यमाह**, जामी अबवाब सलात अल-ततुअ ग़ैर मतक्दुम ज़िक्रना लहा, बाब- सलात अल-तरगीब व अल-तरहीब, हदीस नं-1294 में और

रिवायत-6) 405 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम हाकिम رحمه الله रावी **अबुल-अब्बास मुहम्मद बिन याक़ूब** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **अल-मुस्तदरक इला अल-सहीहेयन**, किताब- सलात अल-ततूअ, हदीस नं-1196 में और

रिवायत-7) 405 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम हाकिम رحمه الله रावी **अहमद बिन सलमान अल-फ़क़ीह** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **अल-मुस्तदरक इला अल-सहीहेयन**, किताब-सलात अल-ततूअ, हदीस नं-1933 में और

रिवायत-8) 405 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम हाकिम رحمه الله रावी **हमज़ा बिन अल-अब्बास अल-अक़बी बी-बग़दाद** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, किताब: **अल-मुस्तदरक इला अल-सहीहेयन**, किताब-अल-दुआ व अल-तकबीर व अल-तहलील व अल-तस्बीह व अल-ज़िक्र, हदीस नं-1953 में और

रिवायत-9) 405 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम हाकिम رحمه الله रावी **अबु-मुहम्मद अब्दुल-अज़ीज़ बिन अब्दुल-रहमान बिन सहल अल-दब्बास** رحمه الله से वो मुकम्मल सनद से, **अल-मुस्तदरक इला अल-सहीहेयन**, किताब-अल-दुआ व अल-तकबीर व अल-तहलील व अल-तस्बीह व अल-ज़िक्र, हदीस नं-1954 में और

रिवायत-10) 458 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-बय्हकी رحمه الله रावी अबु-अब्दुल्लाह अल-हाफ़िज़ رحمه الله से और वो **अबु अल-अब्बास मुहम्मद बिन याक़ूब** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **दलाइल अल-नबुव्वत**, बाब:61- मा फी तालिमिही अल-दरीर मा काना फी शफाऊव हिन् लम यसबर वमा ज़हर फी ज़िल्क वमा आसार अल-नबुव्वत, हदीस नं-1 में और

रिवायत-11) 458 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-बय्हकी رحمه الله रावी अबु-अब्दुल्लाह अल-हाफ़िज़ رحمه الله से और वो **अबु मुहम्मद बिन अब्दुल-अज़ीज़ बिन अब्दुल-रहमान रियली ब-मक्का** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **दलाइल अल-नबुव्वत**, बाब:61- मा फी तालिमिही अल-दरीर मा काना फी शफाऊव हिन् लम यसबर वमा ज़हर फी ज़िल्क वमा आसार अल-नबुव्वत, हदीस नं-2 में,

---

(रिवायत-1से 11 में) :

सहाबी हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه से रिवायत करते हैं के, एक नाबीना (अँधा) शक्श नब़ी.ए.करीम ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुवा, और कहने लगा, **या रसूल-अल्लाह** ﷺ ! अल्लाह से दुआ कर दीजिये के वो मेरी आँखों की बिनाइ (देखने की ताकत) लोटा दे." नब़ी.ए.करीम ﷺ ने फ़रमाया, "तुम चाहो तो में तुम्हारे हक में दुआ कर दू और चाहो तो आखिरत में (बड़े अज्र के लिए) छोड़ दू जो तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है." उस नाबीना शख्श ने कहा के, "दुआ कर दीजिये." इस लिए नब़ी.ए.करीम ﷺ ने उसे हुक्म दिया के, खूब अच्छी तरह वज़ू कर के, दो रकआतें नमाज़ पढ़ो. और फिर ये दुआ मांगो:

"एय अल्लाह ! में तेरे नब़ी मुहम्मद ﷺ जो नब़ी.ए.रेहमत है, उनके वसीले से तुझसे दुआ करता हु और तेरी तरफ मुतवज्जह होता हूँ."

"**या मुहम्मद** ﷺ **(एय मुहम्मद** ﷺ) ! में आप के वसीले को लेकर अपने रब की तरफ मुतवज्जह होता हूँ, और अपनी ये मुराद (ज़रूरत) पेश करता हूँ ता की अल्लाह मेरी ज़रूरत पूरी कर दे."

"एय अल्लाह ! मेरे हक में नब़ी ﷺ की सिफारिश को क़बूल फरमा."

हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه फरमाते हैं, उस शख्श ने इसी तरह (नमाज़ और दुआ) की और अल्लाह ने उसकी बिनाइ (देखने की ताकत) वापस लोटा दी.

फ़सल-2.) रसूल-अल्लाह ﷺ के हुक्म पर सहाबा की वसीले के तरीके पर नसीहत करना

बाब-2.): सहाबी उस्मान बिन हुनैफ़ رضي الله عنه का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-12) 360 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-तबरानी رحمه الله रावी **ताहिर बिन इसा बिन केयरस अल-मकरी अल-मिसरी अल-तमीमी** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, किताब: **मुअजम अल सग़ीर अल-तबरानी**, बाब-अल-ता, मन इसम ताहिर में, और

रिवायत-13) 360 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-तबरानी رحمه الله रावी **इदरीस बिन ज़ाफर अल-अत्तार** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **मुअजम अल कबीर अल-तबरानी**, बाब- मन इसम उस्मान, मा असनाद उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه, हदीस नं-8311 में और

रिवायत-14) 430 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-अस्बहानी رحمه الله रावी **अबु-उमर** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **मआरीफ़त अल-सहाबा ल अबी-नईम अल-अस्बहानी**, बाब- मन इसम उस्मान, उस्मान बिन हुनेफ़ अन्सारी رضي الله عنه की रिवायात, हदीस नं-4928 में और

रिवायत-15) 430 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-अस्बहानी رحمه الله रावी **अबु-मुहम्मद बिन हय्यान** رحمه الله से और वो मुकम्मल सनद से, अपनी किताब: **मआरीफ़त अल-सहाबा ल अबी-नईम अल-अस्बहानी**, बाब- मन इसम उस्मान, उस्मान बिन हुनेफ़ अन्सारी رضي الله عنه की रिवायात, हदीस नं-4929 में और

रिवायत-16) 458 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-बय्हकी رحمه الله हज़रत **अबु सईद अब्दुल-मलिक बिन अबी-उस्मान अल-ज़ाहिर** رحمه الله से मुकम्मल सनद से, **दलाइल अल-नबुव्वत**, बाब: मा फी तालिमिही अल-दरीर मा काना फी शफाऊव हिन् लम यसबर वमा ज़हर फी ज़िल्क वमा आसार अल-नबुव्वत, हदीस-3 में

रिवायत-17) 458 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-बय्हकी رحمه الله रावी **अबु अली अल-हसन बिन अहमद बिन इब्राहीम बिन शाज़ान** رحمه الله से मुकम्मल सनद से, **दलाइल अल-नबुव्वत**, बाब: मा फी तालिमिही अल-दरीर मा काना फी शफाऊव हिन् लम यसबर वमा ज़हर फी ज़िल्क वमा आसार अल-नबुव्वत, हदीस-4 में

रिवायत-18) 656 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-मुन्ज़री رحمه الله मुहद्दिस **इमाम अल-तबरानी** رحمه الله से नक़ल कर हदीस को सहीह लिखते हुए अपनी किताब: **अल-तरगीब व अल-तरहीब**, किताब-अल-नवाफ़िल, बाब-अल-तरगीब फी सलात अल-हाजात व दुआअहा, हदीस नं-1 में और

रिवायत-19) 807 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-हय्समी رحمه الله मुहद्दिस **इमाम अल-तबरानी** رحمه الله से नक़ल कर हदीस को सहीह लिखते हुए अपनी किताब: **मजमुअ-अल-ज़वाईद**, किताब-अल-सलात, अबवाब अल-अयन, बाब: सलात अल-हाजात, हदीस नं-3668 में और

रिवायत-20) 911 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-समहुदी رحمه الله मुहद्दिस **इमाम अल-तबरानी** رحمه الله से नक़ल कर हदीस को सहीह लिखते हुए अपनी किताब: **वफ़ा अल-वफ़ा ब अख्बारी दारुल मुस्तफ़ा** ﷺ, अल-फ़सल अल-सालिस, फी तवस्सुल अल-ज़वाईद, हदीस नं-3 में

(रिवायत-12 से 20 में) :

सहाबी हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه से बयान करते हैं के, एक शख्श अपने ज़ाती काम के सिलसिले में हज़रत उस्मान बिन अफ्फान رضي الله عنه (जो उस वक़्त खलीफा ए वक़्त थे) के पास आता जाता रहा. लेकिन हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه ने उसकी तरफ तवज्जो नहीं की. और उस शक्श की ज़रुरत को पूरा नहीं किया. उस शख्श की मुलाकात सहाबी हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه से हुई तो उस शख्श ने हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه के सामने ये सूरते हाल पेश की, तो हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه ने उस शख्श से कहा, तुम वजू के बर्तन के पास जा कर वजू करो फिर मस्जिद में जा कर दो रकआत नमाज़ अदा करो, फिर ये दुआ करो: "एय अल्लाह ! में तुझ से सवाल (हाजत) करता हूँ. और तेरे नबी मुहम्मद ﷺ के वसीले से तेरी बारगाह में मुतवज्जह होता हूँ जो रेहमत वाले नबी है." , "**या मुहम्मद ﷺ (एय मुहम्मद ﷺ)** ! में आप के वसीले से अपने रब की बारगाह में मुतवज्जह होता हूँ, ता की अल्लाह मेरी हाजत पूरी कर दे."

हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه फरमाते है, "फिर उसके बाद तुम अपनी हाजत का ज़िक्र करना, फिर मेरे पास आना में तुम्हारे साथ जाऊंगा."

वो शख्श गया और उसने ये अमल किया जो हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه ने उसे बताया था. फिर वो खलीफा हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه के दरवाज़े पर आया तो दरबान आया और उसने उस शख्श का हाथ पकड़ा और उसे हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه के पास ले गया. हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه ने उसे अपने साथ चटाई पर बिठाया. और दरयाफ्त किया: "तुम्हारा क्या काम है"?

उस शख्श ने अपनी हज़्त ज़िक्र की. हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه ने उस हाज़त को पूरा किया. फिर वो बोले: "तुमने अपनी ज़रुरत का ज़िक्र ही नहीं किया, यहाँ तक के ये वक़्त हो गया." फिर उन्होंने फ़रमाया: "जब भी तुम्हे कोई काम हो तो मेरे पास आ जाना."

फिर वह शख्श हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه के यहाँ से निकला तो रास्ते में उसकी मुलाकात हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه से हुई. तो उसने हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़्फ़ رضي الله عنه से कहा: अल्लाह तआला आप को जज़ा ऐ ख़ैर अता फरमाए. वह साहब जो कभी मेरी हाजत की तरफ तवज्जो नहीं करते थे और मेरी तरफ इतफात नहीं करते थे. यहाँ तक के आप ने उनके साथ मेरे बारे में बात-चित की. (तो उन्होंने मेरा काम किया).

फ़सल-2.) रसूल-अल्लाह ﷺ के हुक्म पर सहाबा की वसीले के तरीके पर नसीहत करना

बाब-2.): सहाबी उस्मान बिन हुनैफ़ رضي الله عنه का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

तो हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه ने फ़रमाया: अल्लाह की क़सम ! में ने तो हज़रत उस्मान गनी رضي الله عنه के साथ कोई बात-चित नहीं की, मगर (बात ये हैं के): में एक मरतबा नब़ी-ए-करीम ﷺ के पास मौजूद था. एक शख्श जो नाबीना था वो आप ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुवा. और आप ﷺ के सामने अपनी आँखों की बिनाई (रौशनी) वापस लाने की शिकायत की. तो नब़ी-ए-करीम ﷺ ने फ़रमाया: "अगर तुम सब्र करलों! (तो ज्यादा बेहतर है)"
उस नाबीना शख्श ने अर्ज़ की: "**या रसूल-अल्लाह** ﷺ ! मुझे साथ लेकर चलने वाला कोई नहीं हैं. और ये बात मेरे लिए बोहोत तकलीफ देह है."
तो नब़ी-ए-करीम ﷺ ने उसे फ़रमाया: "तुम वज़ू के बरतन के पास जाओ, वज़ू करो, फिर दो रकआत नमाज़ अदा करो. फिर ये दुआ करो.":
(फिर दुआ के वही कलेमात कहे जो हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه उस शख्श को बता चुके थे).
हज़रत उस्मान बिन हुनेफ़ رضي الله عنه ने बयान किया: अल्लाह की क़सम ! अभी हम लोग वहां से उठ कर गए भी नहीं थे. और ज्यादा बात चित भी नहीं की थी के वो नाबीना शख्श फिर हमारे पास आया तो यूँ लग रहा था जैसे उसे पहले (देखने की) कोई तकलीफ थी ही नहीं.

इमाम अल-तबरानी رحمه الله (360 हिजरी मु.) ने इस रिवायात के तमाम तुरूक़ ज़िक्र करने के बाद ये फ़रमाया: ये हदीस **सहीह** हैं.

शैखुल मदीना हज़रत इमाम अल-समहूदी رحمه الله (911 हिजरी मु.) ईस हदीस का ज़िक्र करने से पहले फ़रमाते हैं:
याद रखें के हुजुर ﷺ के ज़रिए अल्लाह से मदद मांगना, बारगाहे इलाही में से आप ﷺ की शफ़ाअत मांगना, आप ﷺ के मरतबे और बरकात का वास्ता देना अंबिया व मुरसलीन عليهم السلام और सलफ़ व सालेहीन رضي الله عنهم का तरीक़ा चला आया हैं. जो हर हाल में होता रहा हैं. आप ﷺ की पैदाइश से पहले और बाद में भी ये सिलसिला चला आया जब आप ﷺ दुन्या में ज़िन्दा मौजूद थे. आप ﷺ की बरज़खी ज़िंदगी में और क़यामत के दिन तक ये सिलसिला ज़ारी रहेगा.
हालाते अव्वल में अंबिया عليهم السلام की कई रिवायतें मिलती हैं जिनमे आप ﷺ की पैदाइश से पहले आप ﷺ को वसीला बनाया जाता. दूसरी सुरत ये है के, हुजुर ﷺ को आपकी पैदाइश के बाद आपकी दुनयावी ज़िंदगी में आप ﷺ को वसीला बनाया जाता. तीसरी सुरत ये है के, हुजुर ﷺ के विसाल के बाद आप ﷺ को वसीला बनाया जाए. (फिर हदीस बयान करने के बाद इमाम अल-समहूदी رحمه الله फ़रमाते हैं:)
में कहता हूँ, ईस हदीस से पहले सैयदा फ़ातिमा बिन्ते असद رضي الله عنها की क़ब्र के बारे में हुजुर ﷺ का ये फ़रमान बयान कर चुके हैं के, "ब हक्के नबियक व अंबिया अल्लज़ीना मिन क़ब्ली" (अल्लाह तेरे नबी और मुझसे पहले के अंबिया के वसीले से)
(इसके बाद इमाम अल-समहूदी رحمه الله फ़रमाते हैं): कभी आप ﷺ को वसीला बनाना आप ﷺ के विसाल के बाद होता हैं और वो यूँ के, आप ﷺ को दरख्वास्त की जाए जैसे आप ﷺ की ज़िदगी में दरख्वास्त की जाती थी.

फ़सल-3.) रसूल-अल्लाह ﷺ के विसाल के फ़ौरन बाद वसीला

बाब-3.): अमीरुल-मोमिनीन अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-21) 403 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-बाक़लानी رحمه الله अपनी किताब: **मुतमहीद अल अवाईल व तलखीस अल दलाइल**, बाब: अल कलाम फी इमामत अबी बक्र رضي الله عنه, सफा-487 से 489 में, और

रिवायत-22) 453 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-किरवानी رحمه الله अपनी किताब: **ज़हरुल आदाब व समरुल अलबाब**, बाब: रसाऊह ल रसूल-अल्लाह ﷺ मिन कलाम अबी बक्र رضي الله عنه, जिल्द-1, सफा-67 में, और

रिवायत-23) 474 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अबी अल-वलीद अल-बाज़ी رحمه الله अपनी किताब: **सुनन अल सालिहीन व सुनन अल आबिदीन**, बाब-220: फ़क़्द अल उहबत, जिल्द-1, सफा-806, हदीस नं-3580 में, और

रिवायत-24) 505 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-गज़ाली رحمه الله अपनी किताब: **ईहया ए ऊलूम अल दीन**, किताब: ज़िक्र अल मौत व मा बादहा, बाब: फी वफ़ात रसूल-अल्लाह ﷺ मक्कीफ़ अल सहाबा, जिल्द-9, सफा-398 से 399 में, और

रिवायत-25) 620 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम इब्ने क़ुदामाह رحمه الله अपनी किताब: **अल रिक़ातु व अल बुका**, किताब: ज़िक्र वफ़ात रसूल-अल्लाह ﷺ बाब: अबुबक्र यक़ताऐ कलाम उमर वयुबयीन हक़ीकत वफ़ात अल रसूल-अल्लाह ﷺ, सफा-139 से 140 में, और

फ़सल-3.) रसूल-अल्लाह ﷺ के विसाल के फ़ौरन बाद वसीला

बाब-3.): अमीरुल-मोमिनीन अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-26) 817 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम मज्दिद्दीन अल-फिरोज़ाबादी رحمه الله अपनी किताब: **अल मगानीम अल मुताबह फी मआलिमे ताबाह**, बाब: अल सीन, सफा-187 से 188 में, और

रिवायत-27) 923 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-क़स्तलानी رحمه الله अपनी किताब: **अल मवाहिब अल लिदुनया**, अल-फसल: अव्वल, फी इतमामह तआला नेअमतह अलय्ह ब वाफतेह व नक्लतह इला हज़िरत क़ुद्सत ल-दीयह ﷺ, जिल्द-3, सफा-391 में, और

रिवायत-28) 1122 हिजरी मुतवफ्फा: अल्लामा अज़-ज़रकानी رحمه الله अपनी किताब: **अल शरह अल्लामा अज़ ज़रकानी अला अल मवाहिब अल लिदुनया**, अल-फसल: अव्वल, फी इतमामह तआला नेअमतह अलय्ह ब वाफतेह व नक्लतह इला हज़िरत क़ुद्सत ल-दीयह ﷺ, जिल्द-12, सफा-142 से 143 में, और

रिवायत-29) 1014 हिजरी मुतवफ्फा: मुल्ला अली अल-क़ारी رحمه الله अपनी किताब: **अल जमअ अल वसाईल फी शरह अश-शमाईल**, बाब: बयान कैफ़ियत सलूत अल जनाज़ह अला अल नब़ी ﷺ, जिल्द-1, सफा-738 में,

---

(रिवायत-21 से 29 में) :

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضي الله عنه बयान फरमाते हैं के, जब हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه को रसूल-अल्लाह ﷺ की वफात की वफात की इत्तिला हुई तो हज़रत अबुबक्र رضي الله عنه सरकारे दो आलम ﷺ के हुजरे मुबारका में दुरूद पढ़ने हुए तशरीफ़ लाए. इस हाल में के आप की आँखों से आंसु बह रहे थे. और सिद्दते लरज़ से दांत बिच रहे थे. उसके बावजूद हज़रत अबुबक्र رضي الله عنه कोल व फ़ेल में मज़बूत थे. ईस तरह के हज़रत अबुबक्र رضي الله عنه रसूल-अल्लाह ﷺ के जसदे-मुबरक पर झुके, आप ﷺ के चेहरे मुबारक पर से कपडा हटाया. आप ﷺ की पेशानी और खसरों को बोसा दिया. आप ﷺ के चेहरे मुबारक पर हाथ फेरते जाते थे. और रोते हुए कहते जाते थे के:

"मेरे माँ-बाप, मेरी जान, और घर बार सब कुछ आप पर फ़िदा हो,
आप ज़िन्दा भी अच्छे थे और इंतकाल फरमा कर भी अच्छे हैं,
आप की वफात से वो बात ख़त्म हो गई जो दुसरे अंबिया की वफात से ख़त्म नहीं हुई थी, यानी नबुव्वत,
आप का मरतबा नाकाबिले बयान हैं, रोने से बरतर हैं,
आप मखसूस हुए तो एय्से के सब के लिए ज़रिया ऐ तसल्ली बन गए, और आम हुए तो एय्से के हम सब आप के बाब में बराबर हो गए,
अगर आप की वफात आप के इख़्तियार से होती तो हम मारे गम के अपने आप को हालाक कर डालते,
और अगर आप ने हमें रोने से मना ना फ़रमाया होता तो हम आप के गम में आँखों का सारा पानी बहा देते,
लेकिन जो बात हम खुद से दूर नहीं कर सकते वह जुदाई और फ़िराक का रंज हैं."

"एय अल्लाह ! तु ये बातें हमारे हुज़ूर ﷺ तक पोहोंचा दे."

, "**या मुहम्मद ﷺ (एय मुहम्मद ﷺ**) ! आप अपने परवरदिगार के पास हमें याद रखे. और हमें अपने दिल में जगह दें. अगर आप अपने पीछे सुकून ना छोड़ जाते तो कोन था जो आप की जुदाई की वहसत से नजात पाता."

"एय अल्लाह ! अपने नब़ी तक हमारे अहाल पोहोंचा दे. और हुजुर ﷺ की याद और इत्तिबा को हम में महफूज़ फरमा."

[इन्ही हालात पर एक और रिवायत हैं]:

हज़रत इब्ने मुनीर رحمه الله बयान फरमाते हैं के, जब रसूल-अल्लाह ﷺ का विसाल हुवा तो (मारे-गम से सहाबा की) अक़लें ज़ाईल होने के करीब हो गई. उन सहाबा में से बाज़ जूनून के करीब पोहोंच गए. और बाज़ बिलकुल बेठ गए (शल हो गए). पस वो खड़ा होने की ताक़त नहीं रखते थे. और बाज़ की जुबानें गूंगी हो गई पस वो बोल नहीं सकते थे. और बाज़ बीमार हो गए.

और हज़रत उमर बिन खत्ताब رضي الله عنه उन लोगों में से थे जो जूनून के करीब पोहोंच चुके थे.

हज़रत उस्मान इब्ने अफ्फान رضي الله عنه उन लोगों में से थे जो बोल नहीं सकते थे. और उनको लाया और लेजाया जाता पर वो क़लाम पर क़ादिर नहीं थे.

हज़रत अली अल-मुर्तुज़ा رضي الله عنه बेठ जाने वालों में से थे. वह हरकत नहीं कर सकते थे.

हज़रत अब्दुलाह बिन अनीस رضي الله عنه बीमार हो गए. और इस गम में इंतकाल कर गए.

और हज़रत अबुबक्र सिद्दीक رضي الله عنه उन सब से ज्यादा साबित क़दम रहें. वह यूँ तशरीफ़ लाए के उनकी आँखों से आंसु बह रहे थे. साँस उखड़ा हुवा था. और वह गलोगीर थे. पस हज़रत अबुबक्र सिद्दीक رضي الله عنه नब़ी-ए-करीम ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और आप ﷺ पर झुक गए. आप ﷺ के चेहर-ए-अनवर से कपडा उठाया.

फ़सल-3.) रसूल-अल्लाह ﷺ के विसाल के फ़ौरन बाद वसीला

बाब-3.): अमीरुल-मोमिनीन अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

और हज़रत अबुबक्र सिद्दीक رضي الله عنه ने फ़रमाया:

"आप की ज़िन्दगी और मौत दोनों अच्छी हैं,
और आप के विसाल से वह चीज़ ख़त्म हो गई जो किसी नब़ी के विसाल से ख़त्म नहीं हुई. (इस से मुराद नबुव्वत हैं, क्युकी आप आखरी नब़ी हैं),
आप हर सफ्फत से अज़ीम और रोने से बुलंद हैं,
अगर आप के विसाल पर इख़्तियार होता तो हम आप के विसाल पर नफ्सों को कुरबान कर देते."
"**या मुहम्मद** ﷺ (**एय मुहम्मद** ﷺ) ! अपने रब के यहाँ हमारा ज़िक्र करना और हम आपकी तवज्जो और खयाल में रहें."

[इस रिवायत के बाद इमाम अल-क़स्तलानी رحمه الله ये रिवायत फरमाते हैं]:

इमाम अहमद बिन हंबल رحمه الله ने हज़रत यज़ीद बिन बानूस رحمه الله से और उन्होंने उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईशा सिद्दीका رضي الله عنها से रिवायत किया है:

और इमाम तिबरी رحمه الله ने हज़रत इब्ने अरफा अबदी رحمه الله से से और उन्होंने उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईशा सिद्दीका رضي الله عنها से रिवायत किया है:

हज़रत अबुबक्र सिद्दीक رضي الله عنه नब़ी-ए-करीम के सर-ए-अनवर के जानिब से आप ﷺ के पास आए.

और अपने मुंह को झुका कर आप ﷺ की पेशानी का बोसा लिया. फिर फ़रमाया: "**एय नब़ी** ﷺ) !"
फिर सर उठाया. दोबारा मुंह को झुका कर आप ﷺ की पेशानी का बोसा लिया. और फ़रमाया: "**एय मुन्तखिब और चुने हुए** ﷺ) !"
फिर सर उठाया और फिर मुंह को झुका कर पेशानी का बोसा लिया और फिर फ़रमाया: "**एय ख़लील** ﷺ) !"

फ़सल-4.) हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه की खिलाफ़त में वसीला

बाब-4.): अमीरुल-मोमिनीन अली इब्ने अबु-तालिब رضي الله عنه का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-30) 427 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-सलबी رحمه الله मुहद्दिस **अबु सादिक अल अज़दी अल कूफ़ी** رحمه الله से, अपनी किताब: **अल कशफ़ व अल बयान अलमारूफ़ तफसीर अल सलबी**, सुरह: निसा, आयत: 64, जिल्द-3, सफा-339 में, और

रिवायत-31) 463 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम इब्ने अब्दुल-बर رحمه الله अपनी किताब: **बह्जत अल मजालीस व उन्स अल मुजलीस**, बाब: अल मसाफिहत व तक्बील अलीद व अल फम, जिल्द-1, सफा-439 में, और

रिवायत-32) 671 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-कुरतुबी رحمه الله मुहद्दिस **अबु सादिक अल अज़दी अल कूफ़ी** رحمه الله से, अपनी किताब: **अल जामेउल एहकाम अल कुरान अलमारूफ़ तफसीर अल कुरतुबी**, सुरह: निसा, आयत: 64, जिल्द-6, सफा-439 में, और

रिवायत-33) 683 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-मराकसी رحمه الله मुहद्दिस **हाफिज़ अबु सईद इब्ने अस-समआनी** رحمه الله से, अपनी किताब: **मिस्बाहुज़-ज़लाम फी मुस्तगिसिना ब खैरुल अनाम** عليه السلام, बाब: अन्द किस्सत अल आरबी अल्जी क़दम बाद दफ़्न अल नब़ी ﷺ , सफा-21 में, और

रिवायत-34) 710 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-नस्फी رحمه الله अपनी किताब: **मदारिक अल तन्जील व हक़ाईक़ अल तावील अलमारूफ़ तफसीर अल नस्फी**, सुरह: निसा, आयत: 64, जिल्द-1, सफा-380 में, और

रिवायत-35) 745 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-इन्दलुसी رحمه الله अपनी किताब: **तफसीर अल बहर अल मुहीत**, सुरह: निसा, आयत: 64, जिल्द-3, सफा-296 में, और

रिवायत-36) 911 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-सुयूती رحمه الله मुहद्दिस **हाफिज़ अबु सईद इब्ने अस-समआनी** رحمه الله से, और वो रावी **अबुबक्र हिबतुल्लाह बिन अल फरज** رحمه الله से और वो अपनी मुकम्मल सनद से, किताब: **जामीउल जवामीअ अलमारूफ़ बी अल जामी अल कबीर**, जिल्द-17, हदीस-4/1026, सफा-722 में, और

रिवायत-37) 911 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-सुयूती رحمه الله मुहद्दिस **हाफिज़ अबु सईद इब्ने अस-समआनी** رحمه الله से, और वो रावी **अबुबक्र हिबतुल्लाह बिन अल फरज** رحमه الله से और वो अपनी मुकम्मल सनद से, किताब: **अल हावी ली अल फतावी**, बाब-71: तन्वीरुल हक़ फी इमकान रिवायत अल नब़ी ﷺ व अल मुल्क, जिल्द-2, सफा-248 में, और

फ़सल-4.) हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه की खिलाफ़त में वसीला

बाब-4.): अमीरुल-मोमिनीन अली इब्ने अबु-तालिब رضي الله عنه का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-38) 911 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-समहुदी رحمه الله मुहद्दिस **हाफिज़ अबु-अब्दुल्ला मुहम्मद बिन मुसा बिन अल-नुअमान** رحمه الله से और वो मुहद्दिस **हाफिज़ अबु सईद इब्ने अस-समआनी** رحمه الله से, किताब: **वफ़ा अल-वफ़ा ब अख्बारी दारुल मुस्तफ़ा** ﷺ, अल-फ़सल अल-सानी, बाब: फी बकीयत उद्लत अल ज़ियारत, व इन ततदमन लफ्ज़ अल ज़ियारत नस्सा, जिल्द-4, सफा-186 में,

---

रिवायत-39) 975 हिजरी मुतवफ्फा: अल्लामा अल-मुन्तकी अल-हिन्दी رحمه الله मुहद्दिस **हाफिज़ अबु सईद इब्ने अस-समआनी** رحمه الله से, और वो रावी **अबुबक्र हिबतुल्लाह बिन अल फरज** رحمه الله से और वो अपनी मुकम्मल सनद से, किताब: **कन्जुल उम्माल फी सुनन अल अक़वाल व अल अन्फाल**, बाब: फी क़ुरान सुरह: अल निसा, जिल्द-2, सफा-385 से 386, हदीस-4322 में, और

रिवायत-40) 975 हिजरी मुतवफ्फा: अल्लामा अल-मुन्तकी अल-हिन्दी رحمه الله मुहद्दिस **हाफिज़ अबु सईद इब्ने अस-समआनी** رحمه الله से, और वो रावी **अबुबक्र हिबतुल्लाह बिन अल फरज** رحمه الله से और वो अपनी मुकम्मल सनद से, किताब: **कन्जुल उम्माल फी सुनन अल अक़वाल व अल अन्फाल**, किताब: अल तौबा मन क़िस्म अल अफआल, फ़सल फी फज़िलहा व अह्कमहा, जिल्द-4, सफा-258 से 259, हदीस-10422 में,

---

(रिवायत-30 से 40 में) :

अमीरुल-मोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबु-तालिब رضي الله عنه से रिवायात की हैं, हज़रत अली رضي الله عنه फरमाते हैं:
रसूल-अल्लाह ﷺ को दफन करने के तीन दिन बाद, हमारे पास एक देहाती अरबी आया. उस अरबी ने अपने आप को रसूल-अल्लाह ﷺ की क़बर-ए-अनवर से लिपट गया. और क़बर-ए-अनवर की मिट्टी अपने सर पर डालने लगा. और उस अरबी ने कहा:
"**या रसूल-अल्लाह** ﷺ ! आप ने फ़रमाया हैं. और हमने आप का फ़रमान सुना हैं. आप ने अल्लाह से कलाम बयान फ़रमाया है. और हमने आप से कलाम बयान किया है. जो अल्लाह ने आप पर नाज़िल किया है:

(फिर क़ुरान-ए-पाक की ये आयत तिलावत की, सुरह निसा, आयात-64) वलव अन्नहुम इज़-ज़लमु अनफुसहुम जाऊका फस्तग-फरुल-लाहा वस्तग फरा लहुमुर रसूलु लवजदुल-लाहा तव्वाबुर-रहीम. तरजुमा:
(एय मेहबूब ﷺ !) अगर ये लोग जब (गुनाह कर के) अपनी जानो पर ज़ुल्म कर बेठे थे, तो ये आप के पास आ जाते, फिर अल्लाह से माफ़ी मांगते और रसूल ﷺ भी उनके लिए मगफिरत तलब करते, तो वह ज़रूर अल्लाह को तौबा क़बूल फरमाने वाला बोहोत ज्यादा महेरबान पाएँगे.)

(इस आयत को तिलावत करने के बाद) फिर उस अरबी ने अर्ज़ किया:
में ने (गुनाह कर के) अपने नफ्स पर ज़ुल्म किया हैं, और में आप की बारगाह में (आप के मजार-ए-अक़्दस पर) हाज़िर हवा हूँ, ता की आप अल्लाह से मेरे लिए अस्तग्फार करें.
तो **क़बर-ए-अनवर से आवाज़ आई**: "तुझे (अल्लाह) ने बख्स दिया हैं."

फ़सल-4.) हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه की खिलाफ़त में वसीला

बाब-5.): उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईशा सिद्दीका رضي الله عنها का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-41) 255 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-दारिमी رحمه الله रावी **अबु नुअमान** رحمه الله से, और उन्होंने मुकम्मल सनद से मुहद्दिस **अबु अल-जव्ज़ा अव्स बिन अब्दुल्लाह** رحمه الله से, किताब: **अल मुसनद अलमारूफ़ सुनन अल दारिमी**, किताब: अलामत अल नब्विया ﷺ , बाब-15: मा-इकरामुल्लाहु तआला नबिय्यह ﷺ बआदा मौतीही, जिल्द-1, सफा-259, हदीस नं.-95 में, और

रिवायत-42) 737 हिजरी मुतवफ्फा: अल्लामा अल-ख़तीब अल-तबरेज़ी رحمه الله मुहद्दिस **अबु अल-जव्ज़ा अव्स बिन अब्दुल्लाह** رحمه الله से, किताब: **मिश्कात अल मसाबिह**, किताब: अल-फ़ज़ाईल व अल समाइल, बाब: अल-करामात, जिल्द-4, सफा-452, हदीस नं.-5950 में, और

रिवायत-43) 743 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-तीबी رحمه الله मुहद्दिस **अबु अल-जव्ज़ा अव्स बिन अब्दुल्लाह** رحمه الله से, किताब: **शरह अल तीबी अला मिश्कात अल मसाबिह**, किताब: अल-फ़ज़ाईल व अल समाइल, बाब: अल-करामात, फ़सल सानी, जिल्द-12, सफा-3810, हदीस नं.-5950 में, और

रिवायत-44) 756 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-सिबकी رحمه الله मुहद्दिस **अबी अल-जव्ज़ा** رحمه الله से, किताब: **शिफ़ा उस सीक़ाम फी ज़िरायते खैरुल अनाम** ﷺ अल-हालत अल-ऊला, फी हयातेह ﷺ, सफा-377 में, और

फ़सल-4.) हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ की खिलाफ़त में वसीला

बाब-5.): उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईशा सिद्दीका का अक़ीदा ऐ तवस्सुल (वसीले) पर फ़रमान

रिवायत-45) 911 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-समहुदी मुहद्दिस **अबी अल-जव्ज़ा** से, किताब: **वफ़ा अल-वफ़ा ब अख़्बारी दारुल मुस्तफ़ा** अल-फ़सल अल-अशरून, बाब: फी मा हदस मन ईमारत अल हुजरा बाद जल्क, व अलहाईज़ अल्जी उदीर अलम्हा, जिल्द-4, सफा-115 में, और

रिवायत-46) 923 हिजरी मुतवफ्फा: इमाम अल-क़स्तलानी मुहद्दिस **अबी अल-जव्ज़ा** से, किताब: **अल मवाहिब अल लिदुनया**, फसल: राबीअ, फी सलात सलात अल इस्तासका, जिल्द-3, सफा-255 में, और

रिवायत-47) 1014 हिजरी मुतवफ्फा: मुल्ला अली अल-क़ारी अपनी किताब: **मिरक़ात अल मफातिह शरह मिश्कात अल मसाबिह**, किताब: अल-फ़ज़ाईल व अल समाइल, बाब: अल-करामात, जिल्द-11, सफा-95 से 96, हदीस नं.-5950 में, और

रिवायत-48) 1122 हिजरी मुतवफ्फा: अल्लामा अज़-ज़रकानी अपनी किताब: **अल शरह अल्लामा अज़ ज़रकानी अला अल मवाहिब अल लिदुनया**, अल-फसल: सानी, फी सलात सलात अल इस्तासका, जिल्द-11, सफा-150 में, और

(रिवायत-41 से 48 में) :

हज़रत अबु अल-जव्ज़ा अव्स बिन अब्दुल्लाह अल-अज़दी से रिवायात की हैं, हज़रत अबु अल-जव्ज़ा फरमाते हैं:

एक दफ़ा एहले मदीना शदीद क़ेहेत में मुब्तिला हो गए. तो उन्हों ने उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईशा सिद्दीका से अपने हाल अहवाल बयान किए. (ता की वो हमें कोई मशवरा दे). सैयदा आईशा सिद्दीका ने फ़रमाया,

"तुम लोग नबी-ए-करीम की क़ब्र-मुबरक की तरफ थोडा ध्यान दो. और आप के हुजरा-शरीफ़ की छत में आसमान की तरफ कुछ सुराख़ कर दो. ता की क़ब्र-मुबरक और आसमान के दरमियान छत हाईल ना रहे."

लोगों ने सैयदा आईशा सिद्दीका के फरमान के मुताबिक़ वैसा ही किया. फिर खूब बारिश हुई. और इतनी घास उग आई के ऊंट घास खा खा कर सेहतमंद हो गए. यहाँ तक के चरबी की वजह से ऊंटों की खालें फूल गई. ईस लिए ईस साल का नाम "आम अल-फ़तक" यानी खुशहाली का साल कहा गया.

इमाम अल-तीबी (743 हिजरी) अपनी शरह में और मुल्ला अली अल-क़ारी (1014 हिजरी) अपनी शरह में ज़िक्र फरमाते हैं, बाज़ अइम्मा फ़रमाते हैं: सैयदा आईशा सिद्दीका के मशवरे पर हुजरा-शरीफ़ की छत में सुराख़ का खोला जाना दर-अस्ल **क़ब्र-मुबाराक से वसीला व शिफारिश हासिल करना था.** मलतब ये हैं के हयात मुबारका में लोग रसूल-अल्लाह की ज़ात-ऐ-मुबरका के ज़रिए बारिश के तलबगार होते थे. जब आप की ज़ात-ऐ-मुबरका ने ईस दुन्या से परदा फरमा लिया और वसीले की ज़रूरत पेश आई तो उम्मुल-मोमिनीन सैयदा आईशा सिद्दीका ने हुक्म दिया के **क़ब्र-मुबारक को बारिश की तलबगारी का वसीला बनाया जाए.**

इमाम अल-सिबकी, इमाम अल-क़स्तलानी और अल्लामा अज़-ज़रकानी ने ईस हदीस को वसीले के बाब में ज़िक्र किया हैं.